श्रीः

वाणीं भजत गैर्वाणीम्

मम सङ्कल्पः

राष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः

आचार्यः गुल्लपल्लि श्रीरामकृष्णमूर्तिः

Prof. G S R Krishna Murty

Vice-chancellor

National Sanskrit University Tirupati

- सरल मानक संस्कृत व्यवहार का क्रियान्वयन से प्रादेशिक भाषाओं का पारस्परिक सम्बन्ध सुदृढ करना। जैसे शिबिर, सायं कालीन शिक्षा व्यवस्थादि...
- शिक्षण में गुणवत्ता सम्पादन ।
- संस्कृत शिक्षण में गुणवत्ता वर्धन के लिए कार्यरत शिक्षकों का विशेष प्रशिक्षण।
- प्राचीन वैज्ञानिक अंशो के ऊपर अध्ययन, आधुनिक शिक्षा क्षेत्र में प्रदर्शिनी, कार्यशाला, एवं संगोष्ठी के माध्यम से प्रचार ।
- प्राचीन शास्त्रग्रन्थों का प्रादेशिक भाषाओं में अनुवाद, आधुनिक विषयों का संस्कृत मे अनुवाद ।
- प्राचीन मातृकाओं का सम्पादन और प्रकाशन ।
- पराम्परागत शास्त्रों का संरक्षण ।
- वेदविद्याशाखाओं का ध्वनिमूद्रीकरण ।

SRC

S
सामाजिक उत्तरदायित्व

- संस्कृत एवं संस्कृत विषयों का अध्ययन अध्यापन हेतु स्रोतों का निर्माण एवं प्रसरण।
- "संस्कृतमय गाँव" निर्माण के लिए कुछ गाँवों का अधिग्रहण ।
- संस्कृतशिक्षण के द्वारा समाज में नैतिक पारिवारिक एवं सामाजिक मूल्यों का विकास ।

R
अनुसन्धान

- भारतीय ज्ञानपरम्परा / संस्कृत और विज्ञान का विशेष शोध केन्द्रों की स्थापना।
- प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण (NLP) में अनुसंधान के माध्यम से कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) के लिए संस्कृत को सबसे उपयुक्त भाषा के रूप में स्थापित करना।
- आधुनिक संस्कृत साहित्य का निर्माण एवं लेखकों का प्रोत्साहन।

C
पाठ्यक्रम विकास

- प्राचीन ज्ञान परम्पराधरित अल्पावधि पाठ्क्रमों (Credit Based) का निर्माण।
- Credit Transfer System के माध्यम से संस्कृत च्छात्रों को आधुनिक विषय पढने का अवसर प्रदान।
- संस्कृत छात्रों का कौशल विकास तथा बहुमुखी विकास हेतु बहुमुख आयामी पाठ्यक्रम का सृजन ।

विश्वविद्यालय का सर्वाङ्गीण विकास हेतु सर्वदा नैतिकता एवं आत्मनिर्भरता नितान्त अपेक्षित है । तदर्थ चतुस्सूत्री योजना CTCC

- ✓ सामाजिक अपेक्षाओं की पूर्ति करने हेतु परमार्श केन्द्रों का विकास । (C)
- ✓ सेवाकालीन संस्कृत शिक्षक एवं आचार्यों का प्रशिक्षण केन्द्र का स्थापना। (T)
- ✓ छात्र एवं सामाजिक समस्याओं के सम्बन्ध में उद्बोधन केन्द्र का विकास । (C)
- ✓ भारतीय कलाओं का उन्नयन से प्राचीन अवधारणों का उद्धारण। (C)

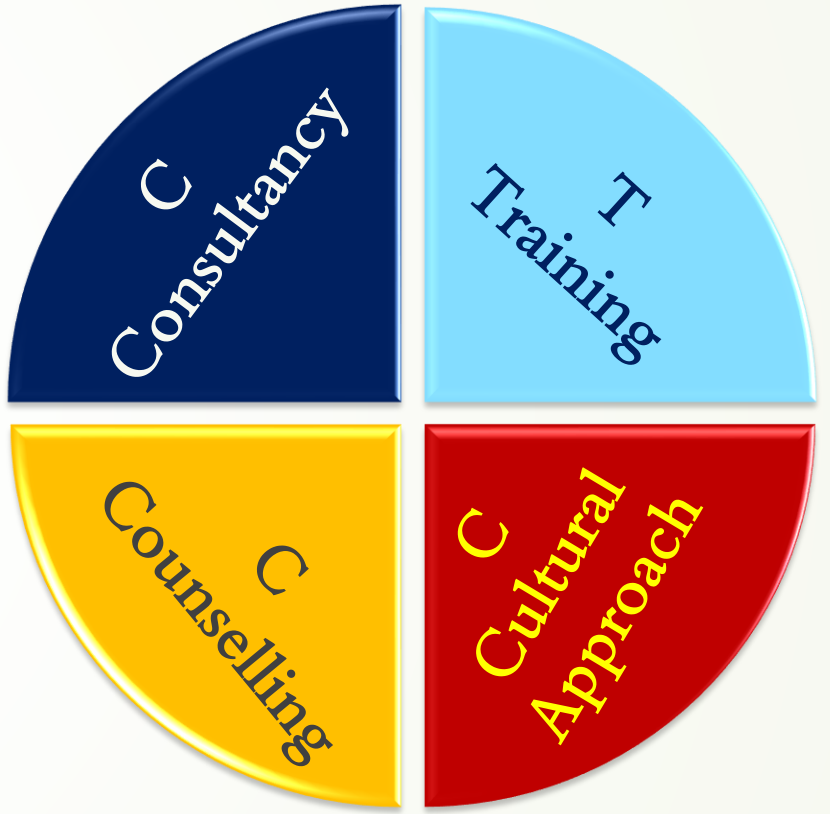

सङ्गच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मनांसि जानताम् ।

देवा भागं यथा पूर्वे सञ्जानाना उपासते ।।

ऋग्वेद १०.१९१.२।।

।। जयतु संस्कृतम् ।।

।। जयतु भारतम् ।।

धन्यवादः